खण्ड-274, अंक-7
शनिवार, 31 आषाढ़, शक संवत् 1889
(22 जुलाई, 1967 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 274 में 8 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६७

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, २२ जुलाई, १९६७

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ, में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री जगदीश शरण अग्रवाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य २८०

अंगने लाल, श्री
अख्तर अली खां, श्री
अजीत प्रताप, श्री
अठई राम, श्री
अतीकुर्रहमान, श्री
अब्बुल खालिक, श्री
अब्बुल मुईज खां, श्री
अयोध्या प्रसाद, श्री (झांसी)
अयोध्या प्रसाद, श्री (मिर्जापुर)
अयोध्या प्रसाद आर्य, श्री
अर्जुन, श्री
अवैद्यनाथ, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अशर्फी लाल, श्री
अश्वनी कुमार, श्री
अश्वनी कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', श्री
अहमदउल्ला खां, श्री
आत्मा, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रमणी, श्री
ईश्वर शरण, श्री
उदय प्रताप, श्री
उदयवीरसिंह, श्री
उदित नारायण, श्री
उमादत्त, श्री
ऊदल, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
ओंकार सरन, श्री
ओम् प्रकाश, श्री
कन्धई लाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री (झांसी)
कन्हैयालाल बाल्मीकी, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमला प्रसाद, श्री (जौनपुर)
कमला प्रसाद, श्री (बहराइच)
करनसिंह, श्री
कला रानी, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याण चन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याण सिंह, श्री
कामता सिंह, श्री
कालीचरण, श्री
काशीनाथ, श्री
किशनलाल, श्री
किशन सिंह, श्री
किशुन लाल, श्री
कृष्ण सिंह, श्री
कृष्ण नन्द राय, श्री
केदार राज जंग बहादुर राणा, श्री
केशव देव, श्री
खूब सिंह, श्री
खेमा, श्री
गंगाधर, श्री
गंगाप्रसाद, श्री (एटा)
गंगा प्रसाद, श्री (मथुरा)
गंगाभक्तसिंह, श्री
गंगाराम, श्री
गंगास्वरूप भटनागर, श्री
गजाधर, श्री
गया प्रसाद, श्री (उपनाम मास्टर साहब)
गया प्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाशंकर, श्री

गिरधारी लाल, चौधरी
गिरिराज, सिंह, श्री
गुप्तार सिंह, श्री
गुलाब सिंह, श्री
गेंदा सिंह, श्री
गोपालदत्त ओझा, श्री
गोपाल राम दास, श्री
गोविन्द नारायण तिवारी, श्री
गौरी राम, श्री
गौरीशंकर सराफ, श्री
गौरीसिंह राठौर, श्री
घनश्याम गिरि, महन्त
घनश्याम दास, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्र किशोर, श्री
चन्द्र कुमार, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रबली , श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्र शेखर, श्री
चन्द्र शेखर सिंह, श्री
चन्द्र सिंह रावत, श्री
चरण सिंह, श्री
चेतराम पचपेड़ा, श्री
चेतराम वर्मा, श्री
जंगबहादुर, श्री
जगत सिंह, श्री
जगदम्बा प्रसाद, श्री
जगदीश नारायण त्रिपाठी, श्री
जगन प्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथ प्रसाद, श्री
जगपत सिंह, श्री
जगवीर सिंह, श्री
जमीलुर्रहमान, श्री
जयनारायण सिंह, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जयेन्द्रसिंह, श्री
जवाहर लाल, डाक्टर
जवाहर लाल जाटव, श्री
जवाहिर लाल, श्री
जसोदा नन्द, श्री
जानकी प्रसाद, श्री
जियाउर्रहमान, श्री
जी० एस० चौधरी, श्री
जुगल किशोर, श्री
जे० एन० सिन्हा, श्री
जैदत्त सिंह, श्री
जैनूराम, श्री
झारखन्डे राय, श्री
टम्बेश्वर प्रसाद, श्री
टीकम सिंह, श्री
तिरमल सिंह, श्री
तेजसिंह, श्री
त्रिवेणी, श्री
त्रेपन सिंह, श्री
दल बहादुर सिंह, श्री
दल सिंह, श्री
दशरथ, श्री
दीपंकर, आचार्य
दुर्गा प्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
दृगराज सिंह, श्री
देव राम, श्री
देवीचरण अग्निहोत्री, श्री
देवी दयाल सेन, श्री
देवी सहाय वाजपेयी, श्री
देवी सेवक, श्री
देशराज सिंह, श्री
धनराज यादव, श्री
धनुषधारी पांडेय, श्री
धर्मगज सिंह, श्री
धर्मवीर, श्री
धर्मवीर सिंह, श्री
धर्मसिंह, श्री
ध्रुव कुमार, श्री
नन्हेंलाल, श्री
नरदेव सिंह, श्री
नरवदेश्वर, श्री
नवल किशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायण दास, श्री
नारायण सिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नियाज हसन, श्री
निहाला सिंह, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नेमपाल सिंह, श्री
नौनिहालसिंह, श्री

पञ्जर राम, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पीतम सिंह, श्री
प्यारेलाल, श्री (अलीगढ़)
प्यारे लाल, श्री (अलीगढ़)
प्रताप नारायण तिवारी, श्री
प्रताप सिंह, श्री
प्रभाकर त्रिपाठी, श्री
प्रभु दयाल, श्री
प्रेमदत्त, श्री
फारुक चिश्ती, श्री
फूल सिंह, श्री
बंशीधर, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बजरंग बली, ब्रह्मचारी
बदनसिंह, श्री
बदल राम, श्री
बनारसीदास, श्री
बलदेव सिंह, सरदार
बलवीरसिंह, श्री (मेरठ)
बलवीरसिंह, श्री (फर्रुखाबाद)
बसन्तलाल, श्री (जालौन)
बसन्तलाल, श्री (लखनऊ)
बसन्त सिंह, श्री
बाबू बक्सरे, श्री
बाबूराम, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबू सिंह, श्री
बिशनलाल, श्री
बुधिराम, श्री
बृज किशोर, श्री
बृजपालसिंह, श्री
बृजमोहन दास अग्रवाल, श्री
बेचनराम, श्री (मिर्जापुर)
बेचनराम, श्री (वाराणसी)
बेनीबाई, श्रीमती
बेनीसिंह, श्री
बेनीसिंह अवस्थी, श्री
बैजनाथ, श्री (वाराणसी)
ब्रह्माश्रम, स्वामी
भगवतीसिंह विशारद, श्री
भगौती, श्री
भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री
भग्गूराम, श्री (उपनाम भृगुनाथ)
भारतसिंह चौहान, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
भुवनेशभूषण, श्री
भगुनाथ चतुर्वेदी, श्री
भैरवदत्त धुलिया, श्री
मंगलदेव, श्री
मंजूर अहमद, श्री
मकसूद हुसैन, श्री
मदनमोहन मिश्र, श्री
मदनमोहनसिंह, श्री
मधुकर दिघे, श्री
मन्नालाल, श्री
मन्नीलाल, श्री
मन्सादीन, श्री
मलिखानसिंह, श्री
महरामसिंह, श्री
महिपालसिंह, श्री
महेन्द्रप्रतापसिंह, कुंवर
महेशकुमार, श्री
माताप्रसाद, श्री
मानसिंह, श्री
मुन्शीलाल चमार, श्री
मुक्तिनाथ राय, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुनीन्द्रपालसिंह, श्री
मुन्शीलाल, श्री
मुरलीधर, श्री
मुलायमसिंह, श्री
मुल्कीराज, श्री
मुल्तानसिंह, श्री
मुहम्मद महमूद अली खां, श्री
मुहम्मद रऊफ, श्री
मोतीलाल देहलवी, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल कपूर, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह श्री (उपनाम लल्लन जी)
योगेश्वर प्रसाद, श्री
रईसउद्दीन, श्री
रघुनाथसिंह, श्री (आगरा)
रघुनाथसिंह, श्री (कानपुर)
रघुनाथसिंह, श्री (झांसी)

रघुनाथसिंह वर्मा, श्री
रघुराज, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीरसिंह, श्री (एटा)
रघुवीरसिंह, श्री (मैनपुरी)
रफीमुहम्मद खां, श्री
रमाकान्त, श्री
रमावल्लभ मिश्र, श्री
रमाशंकर अग्रवाल, श्री
रवीन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजकिशोर, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथ, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजबली, श्री
राजबहादुर, श्री (जौनपुर)
राजबहादुर, श्री (सीतापुर)
राजबहादुरचन्द, श्री
राजबहादुर द्विवेदी, श्री
राजराजेश्वर, श्री
राजाराम, श्री (आगरा)
राजाराम, श्री (देवरिया)
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रदत्त, श्री
राजेन्द्रप्रतापसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम कपूर, श्री
राम अंजोर, श्री
रामअंचल सिंह सेंगर, श्री
रामआधार, श्री
राम आसरे, श्री
रामकरन, श्री
राम किंकर, श्री
राम किशोर, श्री
राम कुमार, श्री
रामचन्द्र आजाद, श्री
रामचन्द्र जोशी, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्र सिंह, श्री
रामचरन दोहरे, श्री
रामजी लाल सहायक, श्री
रामदास, श्री
रामदुलार पटेल, श्री
रामदुलारे, श्री (गोंडा)
रामदुलारे, श्री (रायबरेली)
रामदेव, श्री (प्रतापगढ़)
राममरेश पांडेय, श्री
रामनरेश शुक्ल, श्री
रामनाथ, श्री (मिर्जापुर)
रामनाथ, श्री (शाहजहांपुर)
राम नारायण, श्री
रामपति, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्यारे शुक्ला, श्री
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री
रामप्रसाद, श्री (आगरा)
रामप्रसाद, श्री (गढ़वाल)
राम प्रसाद, श्री (रायबरेली)
राम प्रसाद देशमुख, श्री
रामबचन, श्री
रामबली मिश्र, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
राम रतन, श्री
राम लखन सिंह, श्री
राम लाल, श्री
रामश्री राजपूत, श्री
रामसजीवन, श्री
राम समझावन, श्री
रामसिंह, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसेवक, श्री
रामस्वरूप, श्री (देहरादन)
रामस्वरूप, श्री (मैनपुरी)
रामस्वरूप वर्मा, श्री
रामायण राय, श्री
रुस्तम सैटिन, श्री
रूपनाथ, श्री
लक्ष्मीरमण आचार्य, श्री
लक्ष्मीशंकर, श्री
लटूरीसिंह, श्री
लालकृष्ण कुमार पाल, श्री
लालन शर्मा, श्री
लाल बहादुर, श्री
वरमेश्वर पांडेय, श्री
वसी नकवी, श्री
विजय कुमार त्रिपाठी, श्री
विजय शंकरसिंह, श्री
विपिन बिहारी तिवारी, श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री (उपनाम झींगन साहु)
विश्वनाथसिंह, श्री
विष्णु स्वरूप, श्री

वीरबहादुर, श्री
वीरेश्वर त्यागी, श्री
शंकरसिंह, चौधरी,
शकुंतलादेवी, श्रीमती
शफकत जंग, श्री
शमीम आलम, श्री
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषण सिंह, श्री
शिवगोपाल तिवारी, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवमंगलसिंह, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवलाल, श्री
शिवशंकरसिंह, श्री
शीतलादीन, श्री
शीतलाप्रसादसिंह, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
श्यामलाल यादव, श्री
श्यामसिंह, श्री
श्रीनाथ, श्री
श्री नारायण तिवारी, श्री
श्रीपति मिश्र, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यवीर, कुंवर
सन्तू, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
मालिकराम, श्री
सियाराम, श्री
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेव, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुधामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरेन्द्र विक्रम, श्री
सोहनलाल, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हरिगेनराम, श्री
हरिहरनाथ अग्रवाल, श्री (उपनाम हरी बाबू)
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीशचन्द्र, श्री
हरीशचन्द्रसिंह, श्री
हरीसिंह, श्री (बुलन्दशहर)
हरीसिंह, श्री (मेरठ)
हिम्मतबहादुर, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकमसिंह, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—उप मुख्य मंत्री, श्री राम प्रकाश तथा उद्योग मंत्री श्री प्रभुनारायण सिंह भी उपस्थित थे।

श्री गोविन्द सहाय के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री चरणसिंह)—

अध्यक्ष महोदय, मैं एक दुःखदायी कर्तव्य का पालन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। हम सब को मालूम है कि श्री गोविन्द सहाय जी हमारे बीच में नहीं रहे। श्री गोविन्द सहाय जी हमारे प्रदेश के बहुत पुराने जनसेवकों में से थे, बल्कि यों कहें तो अधिक उचित होगा कि हमारे राजनैतिक क्षितिज में जो थोड़े से इने-गिने लोग हैं, उनमें उनका शमार था। अध्यक्ष महोदय, जाना तो यहां से हम सबको एक दिन है और जब विछोह होता है, चाहे कितनी ही आयु हो, चाहे कितना ही सफल जीवन उसका रहा हो, चाहे स्वयं जाने वाले की इच्छा जाने की रही हो, जो कि कम होता है, लेकिन फिर भी विछोह, विछोह ही है और जो बाद में रह जाते हैं उनको तकलीफ होती ही है विशेषकर उस अवस्था में जब कि जो जाने वाला है और जो बाद में रह जाते हैं, उनका बरसों एक दूसरे के सम्पर्क और एक दूसरे के साथ काम करना और किसी भी जनहित के कार्य में कंधे से कंधा मिला कर काम ही न करना बल्कि तकलीफ उठायी हो। जब इस तरह का सम्पर्क रहा हो, इस तरह का संयोग रहा हो और फिर उसके बाद वियोग हो तो तकलीफदेह हो जाता है। मैं समझता हूं कि मेरे जितने साथी यहां बैठे हैं उनमें से बहुत से लोगों का इस प्रकार का सम्पर्क श्री गोविन्द सहाय जी से रहा है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री चरण सिंह]

हमारी पुरानी पीढ़ी के सदस्यों की पंक्ति में से धीरे-धीरे क्षति होती जा रही है, उसमें कमी आ रही है, धीरे-धीरे लोग इस चित्रपट से हटते जा रहे हैं और उनकी जगह लेने वाले तो हैं, और होंगे जरूर, लेकिन उस प्रकार का मौका उन बाद वाले लोगों को न मिल पायेगा जो कि गोविन्द सहाय जी की पीढ़ी के लोगों को मिला है। मेरे बहुत से साथी जो इधर के बैठने वाले हैं, और उधर के बैठने वाले हैं वे अधितकर ६० वर्ष की आयु के हैं, सन् १९०० के आसपास जिन लोगों का जन्म हुआ था और सन् २०–२१ में इस पीढ़ी के लोग कालेजों में पढ़ते थे और महात्मा गांधी की आवाज पर देश के काम के लिए निकल खड़े हुए। वह जो समा था, उस वक्त का जो वातावरण था, उस वक्त की जो हवा थी वह फिर नहीं आयेगी। कभी-कभी तो यह खयाल होता है कि जनसेवा करने के लिए उस वक्त जो हवा थी और जो अवसर था वह इधर बाद में हम लोगों को मिला ही नहीं बावजूद स्वराज्य हो जाने के। कभी-कभी मेरा खयाल होता है कि यह अरमान लेकर अगर आदमी मर जाता तो अच्छा होता बजाय इसके कि उम्र ज्यादा हो और अरमान पूरे न हों, जैसा कि मेरा खयाल है कि हम लोगों के पूरे नहीं हुये। आशा है कि हमारी नई पीढ़ी जो इधर और उधर बैठी है उसके अरमान पूरे हों और वह देश को उच्च शिखर पर आसीन करने में सफल होगी जो काम हम नहीं कर पाये। फिर भी मेरा तात्पर्य यह है कि श्री गोविन्द सहाय और उनके हम उम्र लोगों को मौका मिला देश की हर तरह की सेवा करने का और वह उन्होंने की। बहुत थोड़ी उम्र में वह राजनीति के अखाड़े में कूद पड़, अनेक बार जेल गये और तरह-तरह की यातनायें उन्होंने सहीं। मुझे भी एक बार सन् ४१ में उनके साथ बरेली सेंट्रल जेल में रहने का मौका मिला, वह कितनी ही बार जेल गये, उसके बाद व उसके पहले भी। वह सन् ३६ में असेंबली के मेम्बर रहे, सन् ४६ में भी रहे और बाद में वह गवर्नमेंट के मेम्बर भी रहे। गवर्नमेंट के बाहर भी उन्होंने कांग्रेस आर्गनाइजेशन का पदाधिकारी बनकर देश की सेवा अपनी रोशनी, अपनी अक्ल और अपनी बुद्धि के अनुसार की। हम सब लोगों को उनके जाने का बहुत दुख है। यों तो उनकी उम्र ६० साल की हो गई थी, लेकिन वह कोई ज्यादा उम्र नहीं होती। स्वास्थ्य की वह बहुत चिन्ता रखते थे और हम समझते थे कि वह बहुत बड़ी उम्र तक जियेंगे, लेकिन ईश्वर को यही मंजूर था कि एक गेलपिंग स्पीड या तेज रफ्तार से आने वाली बीमारी ने उन्हें घेर लिया। मैं उनसे अस्पताल में मिलने गया था, उनके पुत्र वहां मौजूद थे, वह मुझसे कुछ बात करना चाहते थे गोविन्द सहाय जी खुद, लेकिन मैंने उनसे इन्कार कर दिया, उनके लड़के से मैंने बीमारी जानने की कोशिश नहीं की, लेकिन आपसे परसों मालूम हुआ कि ब्लड ट्रांस्फ्यूजन हो रहा है। जब मुझे यह मालूम हुआ कि उनके ब्लड का कैंसर है, मुझको कई बार रह रह कर खयाल हुआ कि इस बीमारी में कितनी तकलीफ उनको उठानी पड़ेगी। कल दोपहर ही खाने के समय यही बात मैं अपनी गृहिणी से कर रहा था।

अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ मैं संयुक्त विधायक दल की ओर से और इस सदन की ओर से आप से दरख्वास्त करूंगा कि हम लोगों के उद्गार आप श्री गोविन्दसहाय जी के परिवार के संतप्त सदस्यों के पास भिजवाने की कृपा करें।

श्री चन्द्रभानु गुप्त (जिला अल्मोड़ा)––

अध्यक्ष महोदय, मैं अपने को उन विचारों से सम्बद्ध करता हूं जो विचार माननीय नेता सदन नें स्वर्गीय गोविन्द सहाय जी के प्रति अभी इस सदन में व्यक्त किये हैं। गोविन्द सहाय जी का निधन राजनीतिक जीवन के लिए एक बड़ा आघात है। श्री गोविन्द सहाय, जैसा कि माननीय नेता सदन ने कहा, हमारे देश के उन सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं और नेताओं में से थे जिन्होंने विद्यार्थी जीवन के उपरान्त देश की सेवा में, देश की आजादी में, विभिन्न क्षेत्रों में सेवा की, त्याग का परिचय दिया और बलिदान का परिचय दिया। गोविन्द सहायक जी हमारे देश और प्रदेश के उन प्रमुख व्यक्तियों में से थे जो कि प्रगतिशील थे, जो कि विचारक थे और जो सार्वजनिक जीवन में प्रगतिशील विचारों के पोषक थे। १९३४ में, ३०, ३१ और ३२ के आन्दोलन के उपरान्त, जब

कांग्रेस के अन्तर्गत कांग्रेस समाजवादी पार्टी का प्रादुर्भाव हुआ था तो वे भी उन व्यक्तियों में थे जोकि उन विचारों के बराबर पोषक रहे जो कि कांग्रेस समाजवादी दल के द्वारा कांग्रेस के अन्तर्गत समय-समय पर प्रसारित किये जाते रहे, वे प्रदेश में और इस सदन में एक प्रमुख वक्ता थे और निर्भय वक्ता थे। अपने विचारों के अनुकूल दूसरों को अपने विचारों के अन्तर्गत तर्क द्वारा लाने की बराबर वे चेष्टा करते थे। कभी उन्होंने विचारों को, अपने आदर्शों को छोड़ा नहीं और सदा उन प्रगतिशील समाजवादी विचारों को तथा कांग्रेस के अन्दर और बाहर फैलाने की चेष्टा की, जिन विचारों के अन्तर्गत रहते हुये आज के और कल के नागरिक देश के उत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं और देश की गुरबत को हमारी नजरों के सामने से ओझल कर सकते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि धीरे-धीरे हमारी पिछड़ी पीढ़ी के लोग तो हमारे बीच से चले ही गये। अब हमारी पीढ़ी के लोग भी धीरे-धीरे हमारे बीच से चले जा रहे हैं और अपने उन कार्यों को जो कि अभी पूरे नहीं हो पायें हैं, उनके हाथों में छोड़ते जा रहे हैं जो उन जिम्मेदारियों को संभालेंगे, जो आज और कल उनके कन्धों पर पड़ने वाली हैं। गोविन्दसहाय जी ने विभिन्न क्षेत्रों में कांग्रेस की सेवा की। जरूरत के समय उन्होंने और उनकी पत्नी ने जेल की यात्रायें तो की हीं वरन् जब-जब अवसर आया निर्माण के कार्यों की दिशा में भी कार्य करने का भार उन्होंने अपने कन्धों पर वहन किया, मंत्री के पद पर रह कर, पार्लियामेन्ट्री सेक्रेटरी के पद पर रह कर। उनकी उन सेवाओं को हम भूले नहीं हैं जो उन्होंने सरकार की विभिन्न कमेटियों के सभापति के नात की है और हम उनके उन विचारों को भी भूले नहीं हैं जो उन्होंने उन कमेटीज के सदर के नाते हम सबको प्रदान किये, चाहे वह कम्यूनिटी प्रोजेक्ट एडमिनिस्ट्रेशन की कमेटी के अध्यक्ष की हैसियत से हों, चाहे वह फैमिली प्लानिंग के अन्तर्गत या सोशल वेलफेयर के अन्तर्गत कमेटी के अध्यक्ष के नाते नये विचारों को देने के सिलसिले में रहे हों।

यही नहीं जब-जब उन्हें अवसर मिला वे विदेश गये भारत के प्रतिनिधि के नाते और उन्होंने उन प्रमुख संगठनों तथा संस्थाओं में भाग लिया जो अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के ऊपर विचार करती हैं। व एशियाई अफ्रीकी सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि के नाते अकरा गये और वहां उन्होंने उन विचारों को सम्मेलन क समक्ष प्रस्तुत किया जो विचार इस देश के उन देशों के प्रति रहे हैं जो पददलित रहे हैं, जो गिरे हुये रहे हैं। वे टोकियो में भारत के प्रतिनिधि क नाते पीस कांफ्रेंस में गये और वे भारतीय कांग्रेस के प्रतिनिधि के नाते बेलग्रेड भी गये और वहां भी उन्होंने भारतीय कांग्रेस के विचारों का उस सम्मेलन में प्रतिनिधित्व किया। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि गोविंद सहाय जी का क्षेत्र केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं था। उनका क्षेत्र केवल भारत की सीमाय ही नहीं थीं, बल्कि जब-जब समय और अवसर मिला उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी भाग लिया। वे यूनाइटेड नेशन्स में एक मर्तबा भारतवर्ष के आल्टरनेट डेलीगेट के रूप में गये और वहां भी उन प्रश्नों पर उन्होंने अपने विचारों को रखा जो विचार उस समय उस सम्मेलन के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत थे। वे विचारक थे, लेखक भी थे। उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा १४, १५ पुस्तकों की रचना भी की थी और उन पुस्तकों के द्वारा उन प्रगतिशील विचारों को फैलाने की चेष्टा की थी जिनके द्वारा आने वाली पीढ़ी के लोग जो दकियानूसी चीजें देश के अन्दर फैली हुई हैं। उससे उनका ध्यान हटे और जो नई प्रगतिशील धारा सारे संसार में फैली हुई है उस दिशा की ओर नवयुवकगण अनुगमन करें और उस रास्ते पर चलने की क्षमता अपने अन्दर पैदा करें जिससे इस देश का भविष्य उज्जवल बन सके और देश में जल्दी से जल्दी विधान में घोषित की हुई समानता हमारी नजरों के सामने आने लगे।

वह उत्साही व्यक्ति थे। उनमें कार्य करने की लगन थी। प्रदेशीय कांग्रेस के महामंत्री के रूप में उन्होंने कांग्रेस संगठन को संभाला और उसके पार्लिामेंटरी बोर्ड के सेक्रेटरी के रूप में उन्होंने अपने उन गुणों का परिचय दिया जिनके द्वारा संगठन सम्हाले जा सकते हैं, जिनके द्वारा संगठन बनाये जा सकते हैं। ऐसा व्यक्ति जो सदा प्रगतिशील था, ऐसा व्यक्ति जो कभी गुस्सा नहीं करता था, ऐसा व्यक्ति जो तर्क का जवाब तर्क से देने की क्षमता रखता था और इस बात का परिचय हमें गोविन्द सहाय जी के उस आखिरी भाषण से प्राप्त होता है जो उन्होंने इस सदन

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

में कदाचित् बजट के जनरल डिक्सशन के ऊपर दिया था। वह कुछ मान्यताओं के पुजारी थे। वे केवल सदन में बैठ कर शोर करके अपनी बात को मनवाने की दिशा में चलने वाले व्यक्ति नहीं थे बल्कि वे अपने विरोधी को अपने तर्क से, अपने विचारों से प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। और मैं कहूंगा कि इस सदन की उनके निधन से आज के समय में बहुत भारी क्षति हुई, क्योंकि आज जो नये सदन सारे देश में चल रहे हैं उनमें आवश्यकता इस बात की है कि उनमें बोलने वाले व्यक्ति उन गुणों को अपनायें जिनके द्वारा विरोधियों को तर्क से प्रभावित करने की चेष्टा प्रत्येक व्यक्ति करे और हर विषय को एक रेशनल ढंग से विचारने और आंकने की चेष्टा करे। श्री गोविंद सहाय जी रेशनलिस्ट थे और उन्होंने जब-जब किसी बहस का मौका आया, चाहे इस सदन के अन्दर, चाहे सदन के बाहर, उन्होंने हमेशा अपने उस रेशनल दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने की चेष्टा की। वे सेंटीमेंटल व्यक्ति नहीं थे जो केवल सेंटीमेंट से प्रभावित होकर अपने विचारों को प्रकट करते। ऐसा तार्किक व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया। यह हमारे लिये और इस सदन के लिए दुख की बात तो है ही परन्तु यह हमारे प्रदेश के लिए और हमारे प्रदेश के सार्वजनिक जीवन के लिए एक भारी क्षति है। यह क्षति आसानी से पूरी नहीं हो सकती।

अध्यक्ष महोदय, इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से आप उनके दुखित परिवार को वह समवेदना भिजवा दें जिसकी चर्चा अभी माननीय नेता, सदन ने आपके समक्ष की है।

श्री अध्यक्ष—

यों तो संसार का साधारण नियम है कि जो मनुष्य आता है वह चला भी जाता है, परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अपने सद्व्यवहार से, अपने अदम्य उत्साह से, अपने सुकृत्यों से इतिहास के पन्नों में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा देती रहती हैं। श्री गोविन्द सहाय जी निश्चय ही ऐसे व्यक्तियों में से एक थे। उनकी मित्रता, उनका प्रभाव राजनीति के तंग घरौंदे तक सीमित नहीं था। यही कारण है आज कदाचित् उनके मित्रों की संख्या, उनके प्रशंसकों की संख्या कांग्रेस से अधिक बाहर मिल सकती है। अपने प्रगतिशील विचारों, प्रगतिशील दृष्टिकोण तथा गहन चिन्तन के प्रभाव से उन्होंने देश के प्रथम पंक्ति के राजनीतिज्ञों में पार्लियामेंटेरियनों में एक ऊंचा स्थान प्राप्त किया हुआ था। माननीय गोविन्द सहाय जी का जन्म बिजनौर जिले में गजरौला नामक स्थान पर १९०७ में हुआ था। अभी ६० वर्ष जीवन के वे पूरे नहीं कर पाये थे। उनके पास रहने वाले उनके स्वास्थ्य जीवन, उनकी चुस्ती और उत्साह को देखकर अभी उनकी उम्र को सही आंक भी नहीं पाते थे। गोविन्द सहाय जी का अंतिम भाषण इस सदन में जैसा कि माननीय नेता, विरोधी दल ने कहा इसी बजट पर सामान्य वाद-विवाद के समय हुआ था।

माननीय झारखंडे राय जी खाद्य मंत्री से मेरी दो, तीन बार बातचीत हुई, उन्होंने मुझ से कहा कि वह उनका सब से अच्छा भाषण था जो उन्होंने अपने इस जीवन में सुना। आखिरी बार बात करते हुये उन्होंने यह भी कहा कि वह सब से अच्छा भाषण था जो उन्होंने इस विधान सभा में सुना। लेकिन उस समय हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि वह सबसे अच्छा भाषण उनका अंतिम भाषण भी हो जायेगा और क्रूर काल की गति इतनी जल्दी उनको हम से छीन लेगी। हमने इसी सदन में सुना कि अपना कार्य करते हुये उनकी तबीयत खराब हुई। वह यहां से सीधे बलरामपुर अस्पताल चले गये। वहां पर उनके रोग का कदाचित् सही निदान नहीं हो पाया। २–३ दिन बाद वे घर घर आ गये और यह मानने लगे कदाचित् वे पूर्णतया स्वस्थ्य हो गये। उसके बाद तीन बार उन्होंने मुझ से यह इच्छा व्यक्त की कि वह सदन में उस समय प्रस्तुत मांग पर बोलना चाहते ह। मैंने उस समय, जो अब मैं धृष्टता समझता हूं, यह कहा कि मैं आपको बोलने की अनुमति नहीं दे सकता।

इसके बाद वे फिर मेडिकल कालेज गये। वहां उनके रोग का निदान हुआ, लेकिन उपचार नहीं हो पाया। कदाचित् संभ भी नहीं था। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी। मुझे दुख रहेगा कि कल उनकी जीवन यात्रा समाप्त होने से पहले अंतिम दर्शन नहीं कर पाया। कल से एक दिन पहले यानी परसों मैं उनके पास था। इससे पहले रोज शाम को मैं उनके साथ बैठा था तो बड़े हंसकर, बड़ी अच्छी भावना से बात कर रहे थे, फिर उन्होंने इच्छा व्यक्त की इस सदन में एक बार तो मुझे ाद विवाद करने का अवसर मिल जाता तो अच्छा था। ऐसी उनकी भावना थी, ऐसी लगन थी अपने कार्य से। उस समय यद्यपि उनके रो का निदान हो चुका था, लेकिन हम नहीं समझ पाये थे कि इतने शीघ्र ही उनकी जीवन यात्रा की समाप्ति का समाचार, जो पहली बार कल सदन में सुना, सुन लेंगे।

उनके जीवन के बारे में कुछ कहना इसलिए बेकार है कि हम सभी लोग उनसे अच्छी तरह से परिचित हैं। जैसे अभी कहा गया १९३७ में वे पहली बार माननीय रफी साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी हुये। १९४७ में पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी हुये, ५२ से ५७ तक कांग्रेस से बाहर रहे। १९६२ में एफो-एशियन कांफेन्स में इंडियन डेलीगेशन का नेतृत्व करके अकरा गये। यू० एन० ओ० में आल्टरनेट डेलीगेट रह कर उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। स से अंतिम यात्रा थी उनकी बैलग्रेड की जिसमें अखिल भारतीय कांग्रेस के डेलीगेशन में नेतृत करने गये थे। उन्होंने अपने जीवन काल में करीब ४० विदेशों में भ्रमण किया। वहां पर भारत के अनौपचारिक ऐम्बेसडर के रूप में प्रतिनिधित्व किया भारतीय विचाराधार का। ऐसी प्रगतिशील विचाराधारा के व्यक्ति आज उपलब्ध होंगे हमारा मार्ग प्रदर्शन करने के लिए मैं नहीं जानता। उनकी सबसे बड़ी विशेषता मैंने यह देखी कि उनके किसी तर्क में, किसी भाषण में, किसी विवाद में, कभी कोई अशिष्ट बात या अप्रिय बात नहीं आती थी। उनका कठोर से कठोर तर्क मधुर माध्यम होता था। यही गुण आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा देने के लिए काफी है। मैं स्वयं भी अपने को उनसे बहुत समीप मानता था। मैं समझता हूं कि उनका व्यवहार ऐसा था कि बहुत से इस सदन के सदस्य और बाहर के लोग ऐसा ही समझते होंगे। आज उनके निधन से जो क्षति हुई हमारे प्रदेश की और देश की, विशेषतया ऐसे समय में जब कि देश में ऐसे व्यक्तियों की बड़ी आवश्यकता है, जबकि देश के सामने बड़ी क्राइसिस है, वह पूरी हो सकेगी मैं नहीं जानता। आज इस सदन की एक ज्योति बुझ गयी। मगर, मैं समझता हूं, उसने जो प्रकाश दिया है वह आने वाली पीढ़ियों को इस सदन के वर्तमान सदस्यों को और आने वाले सदस्यों को प्रेरित करता रहेगा। मैं इससे ज्यादा इस समय कुछ और कहने में अपने को असमर्थ पाता हूं। माननीय नेता, सदन और माननीय नेता, विरोधी दल ने जो विचार प्रकट किये उनके विषय में, और वह विचार जो प्रकट नहीं कर सके, माननीय नेता, जो कदाचित् उनके हृदय, में रह गये, अवरुद्ध कंठ से प्रकट नहीं कर सके, उन सबसे अपने को सम्बद्ध करते हुये सदन को आश्वासन देना चाहता हूं कि उनके संतप्त परिवार को इन समवेदनाओं को मैं पहुंचाऊंगा।

अब इसके बाद हम दो मिनट के लिए खड़े होंगे और भगवान से प्रार्थना करेंगे कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

(सभी सदस्य अपने-अपने स्थान पर २ मिनट के लिए खड़े हुए।)

१९६७–६८ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिये मांगों पर मतदान, अनुदान संख्या २६—नियोजन और समन्वय

श्री अध्यक्ष—

अब, यों तो आज एक बहुत महत्वपूर्ण अनुदान सदन के समक्ष था, किन्तु सारे माननीय सदस्यों की भावना के अनुकूल, माननीय नेता, सदन और माननीय नेता, विरोधी दल से परामर्श करके यह निश्चय किया कि जो अनुदान आज सामने था उसको हम सोमवार को प्रश्नोत्तर के बाद बिना विवाद के स्वीकार कर लेंगे और आज दिवंगत आत्मा के सम्मानार्थ सदन का कार्य समाप्त करते हैं।

[श्री अध्यक्ष]

अब हम उठते हैं। सोमवार को ११ बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ३५ मिनट पर सोमवार, २४ जुलाई, १९६७ के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
२२ जुलाई, १९६७।

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

पी० एस० यू० पी०—ए० पी०—७२ एल० ए०—१९६७—८४६।